प्रेरितों के काम

एक बात के लिए उत्साही

डॉ. डेविड प्लैट

27 फरवरी, 2011

एक बात के लिए उत्साही

प्रेरितों के काम 15:36–18:22

प्रेरितों के काम 15 से 16 ...

यदि आपके पास बाइबल है, और मेरी आशा है कि आपके पास है, तो मेरे साथ प्रेरितों के काम अध्याय 16 निकालें, या पहले हम प्रेरितों के काम 15:36 से आरम्भ करते हैं। मैं कलीसिया के शिक्षकों के लिए बहुत धन्यवादी हूँ। पिछले सप्ताह हमने प्रेरितों के काम 15 का अध्ययन किया और हमने सुसमाचार की महिमा और व्यवस्थावाद के खतरे को देखा था। अब सवाल यह है, आप प्रेरितों के 15 से प्रेरितों के काम 16 पर कैसे पहुँचेंगे?

केवल परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा हम उसके सामने स्वीकार किए गए हैं।

प्रेरितों के का 15 की महत्वपूर्ण, संक्षिप्त, धर्मविज्ञानी, ऐतिहासिक घटना में हमने देखा कि हम केवल परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा उसके सामने स्वीकार किए गए हैं। यही उद्धार का सार है। हमारा उद्धार केवल अनुग्रह से केवल मसीह पर विश्वास करने के द्वारा हुआ है, और हमारे किसी भी कार्य पर नहीं परन्तु मसीह के कार्य पर आधारित है। अतः, हमारा कार्य, जीवन, प्रार्थना, अध्ययन, या आराधना, कुछ भी परमेश्वर का अनुग्रह पाने के लिए, परमेश्वर के सामने स्थान बनाने के लिए नहीं है। हमारे लिए परमेश्वर का अनुग्रह और परमेश्वर के सामने हमारा स्थान केवल मसीह में हमारे विश्वास पर आधारित है। वही हमारी धार्मिकता है।

यह इस सवाल को उठाता है कि, फिर हम कार्य क्यों करते हैं? हम जीते क्यों हैं, और हम प्रार्थना क्यों करते हैं? हम पढ़ते क्यों हैं? हम आराधना क्यों करते हैं? मुझे खुशी है कि आपने यह सवाल पूछा। बात

यह है, हम इन सारे कार्यों को परमेश्वर का अनुग्रह पाने के लिए या किसी भी प्रकार से परमेश्वर के सामने हमारे स्थान को ऊँचा उठाने के लिए नहीं करते हैं। परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा हम उसके सामने स्वीकृत हैं, और उसके अनुग्रह के भागी होने के कारण, हमारे दिल उसकी महिमा चाहते हैं।

हम पूरी तरह से परमेश्वर की महिमा के लिए समर्पित हैं।

तो हम केवल परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा उसके सामने स्वीकृत हैं, और इस कारण, हम पूरी तरह से उसकी महिमा के लिए समर्पित हैं। हम विवश हैं, अनुग्रह से बँधे हैं, और अनुग्रह के द्वारा हम में उसकी महिमा के लिए जीने की लगन लगी है। मैं 19वीं सदी के एक पासबान एवं धर्मविज्ञानी, जे.सी. राइल के कुछ कथनों को उद्धृत करना चाहता हूँ। उन्होंने एक बार उत्साह के विषय पर लिखा था और मैं उसे आप के सामने बताना चाहता हूँ और चाहता हूँ कि यह उसके लिए आधार तैयार करे जो हम वचन में देखने जा रहे हैं। ध्यान से सुनें कि इस पासबान/धर्मविज्ञानी ने क्या कहा है।

जे.सी. राइल ने कहा,

> धर्म में उत्साही व्यक्ति मुख्यतः एक धुन का पक्का होता है। यह कहना पर्याप्त नहीं है कि वह ईमानदार है, समझौता नहीं करता है, पूरे दिल से कार्य करता है, और लगन से भरा है। वह केवल एक बात को देखता है, केवल एक बात की परवाह करता है, केवल एक बात के लिए जीता है, केवल एक ही बात की धुन में रहता है; और वह एक बात है परमेश्वर को प्रसन्न करना। चाहे वह जीए या मरे, चाहे वह स्वस्थ हो या बीमार, चाहे वह अमीर हो या गरीब, चाहे वह मनुष्य को खुश करे या चोट पहुँचाए, चाहे उसे बुद्धिमान माना जाए या मूर्ख, चाहे उस पर दोष लगे या उसकी प्रशंसा की जाए, चाहे उसे आदर मिले या शर्मिन्दगी, यह उत्साही व्यक्ति इन सबकी परवाह नहीं करता है। वह केवल एक ही बात के लिए जलता है; और वह एक बात है परमेश्वर को प्रसन्न करना और परमेश्वर की महिमा को बढ़ाना। जलते समय यदि वह भस्म होता है, तो भी उसे परवाह नहीं है; वह सन्तुष्ट है। उसे लगता है कि दीपक के समान, उसे जलने के लिए बनाया गया है; और जलते समय यदि वह भस्म होता है, तो उसने उस कार्य को कर दिया है जिसके लिए परमेश्वर ने उसे नियुक्त किया था।

मैं एक सवाल पूछना चाहता हूँ, "यदि कलीसिया का हर एक सदस्य इस प्रकार एक बात के लिए उत्साही होता, तो क्या होता?" मैं उसी के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ। परमेश्वर के वचन के साथ जब हम कुछ पल

एक साथ हैं, तो हर पुरूष, हर स्त्री, हर छात्र, हर किशोर जो मसीह को जानता है, परमेश्वर आपके दिल की गहराई में जोश दे। मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर आप को एक बात के लिए उत्साह दे, जो आपके अन्दर जले, आपको चलाए, जो आपको विवश करे। चाहे विवाह हो, परिवार, नौकरी, दोस्त, संपत्ति, योजनाएँ, या सपने, आप केवल एक बात के लिए जलने के द्वारा विवश होते हैं, और वह है, परमेश्वर की महिमा का प्रसार। सब कुछ उस एक बात पर न्यौछावर है।

प्रेरितों के काम 16 और 17 और 18 में हम उसकी एक तस्वीर, एक उदाहरण को देखना चाहते हैं। कुछ सप्ताह पहले जैसे हमने पवित्रशास्त्र के एक बड़े भाग को पढ़ा था, उसी तरह हम पढ़ेंगे, और बीच–बीच में रूककर यह समझने की कोशिश करेंगे कि हम क्या देख रहे हैं, और मैं यह प्रार्थना करना चाहता हूँ कि परमेश्वर अपनी महिमा के लिए हमें इस प्रकार का उत्साह दे।

यह पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा है। इसमें कुछ साल लगे, और हम कुछ ही पलों में इसे पूरा करेंगे। हमें बहुत कुछ देखना है। हम प्रेरितों के काम 15:36 से शुरू करेंगे। सन्दर्भ को याद रखें। प्रेरितों के काम 13 पहली मिशनरी यात्रा है, और पौलुस एवं बरनबास अन्ताकिया में है। उन्हें पहली मिशनरी यात्रा के लिए भेजा गया है। प्रेरितों के काम 13 और 14 का हमने अध्ययन किया था और हमने पहली मिशनरी यात्रा को देखा था।

उस मिशनरी यात्रा के अन्त में, पौलुस और बरनबास अन्ताकिया लौटे। यह एक प्रकार से उनका घर है। वास्तव में प्रेरितों के काम 15 में पौलुस और बरनबास यरूशलेम सभा के लिए यरूशलेम में जाते हैं, इस बहुत महत्वपूर्ण एवं भारी धर्मविज्ञानी विषय का निपटारा करते हैं और फिर वापस अन्ताकिया में आते हैं। जब हम प्रेरितों के काम 15:36 पर आते हैं तो वे अन्ताकिया में रह रहे हैं। बाइबल कहती है, "कुछ दिन बाद पौलुस ने बरनबास से कहा; कि जिन–जिन नगरों में हम ने प्रभु का वचन सुनाया था, आओ, फिर उन में चलकर अपने भाइयों को देखें; कि कैसे हैं। तब बरनबास ने यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, साथ लेने का विचार किया। परन्तु पौलुस ने उसे जो पंफूलिया में उनसे अलग हो गया था, और काम पर उनके साथ न गया, साथ ले जाना अच्छा न समझा।"

कुछ अनुवादों में लिखा है, *"जिसने उन्हें पंफूलिया में अकेला छोड़ दिया था और उनके साथ काम पर नहीं गया था। अतः ऐसा विवाद हुआ, कि वे एक दूसरे से अलग हो गए; और बरनबास, मरकुस को लेकर जहाज पर कुप्रुस को चला गया। परन्तु पौलुस ने सीलास को चुन लिया, और भाइयों से परमेश्वर के*

अनुग्रह पर सौंपा जाकर वहाँ से चला गया। और कलीसियाओं को स्थिर करता हुआ, सीरिया और किलिकिया से होते हुए निकला।" आइए हम कुछ और पदों को देखते हैं।

> *फिर वह दिरबे और लुस्त्रा में भी गया। वहाँ तीमुथियुस नाम एक चेला था, जो किसी विश्वासी यहूदिनी का पुत्र था, परन्तु उसका पिता यूनानी था। वह लुस्त्रा और इकुनियुम के भाइयों में सुनाम था। पौलुस की इच्छा थी कि वह मेरे साथ चले; और जो यहूदी लोग उन जगहों में थे उनके कारण उसे लेकर उसका खतना किया; क्योंकि वे सब जानते थे, कि उसका पिता यूनानी था। और नगर नगर जाते हुए वे उन विधियों को जो यरूशलेम के प्रेरितों और प्राचीनों ने ठहराई थीं, मानने के लिए उन्हें पहुँचाते जाते थे। इस प्रकार कलीसिया विश्वास में स्थिर होती गई और गिनती में प्रतिदिन बढ़ती गई।*

परमेश्वर की महिमा के लिए उत्साही...

हम परमेश्वर के लोगों से प्रेम करते हैं।

परमेश्वर की महिमा के लिए उत्साही। मैं चाहता हूँ हम इसकी एक तस्वीर देखें। परमेश्वर की महिमा के लिए उत्साही होने और एक बात के लिए जलने का क्या मतलब है? इसका मतलब है, सबसे पहले, हम परमेश्वर के लोगों से प्रेम करते हैं। परमेश्वर की महिमा के लिए उत्साह में परमेश्वर के लोगों के लिए प्रेम शामिल है। पौलुस और बरनबास अन्ताकिया में बैठे हैं और पौलुस बरनबास से कहता है, "बरनबास, हमें जाकर उन कलीसियाओं को स्थिर करना चाहिए जिनकी स्थापना में हमारा हिस्सा रहा है।" बरनबास कहता है, "अच्छा विचार है।"

समस्या एक ही है कि बरनबास अपने चचेरे भाई यूहन्ना मरकुस को साथ ले जाना चाहता है। यदि आपको याद हो, जब हमने प्रेरितों के काम 13 और 14 पढ़ा था, यूहन्ना मरकुस ने पौलुस और बरनबास के साथ यात्रा की थी, परन्तु बीच में वह उन्हें छोड़कर चला गया था। अब, इसके बारे में बहुत से अनुमान लगाए जाते हैं कि यूहन्ना मरकुस उन्हें बीच में छोड़कर क्यों चला गया था। कुछ लोगों का सोचना है कि उसे घर

की याद सता रही थी। दूसरों का सोचना है कि उसे किसी प्रकार की बीमारी थी। कुछ लोगों का सोचना है कि यूहन्ना मरकुस को इस पूरे दल में नेतृत्व के पद में पौलुस का बरनबास से ऊपर उठना अच्छा नहीं लगा था। दूसरों का मानना है कि यूहन्ना मरकुस एक मिशनरी जीवन को सहन नहीं कर पाया था।

जो भी हो, पौलुस नहीं चाहता था कि यूहन्ना मरकुस आए और बरनबास उसे साथ ले जाना चाहता था, और इसके कारण उनमें विवाद हुआ और मतभेद बढ़ गया। अब, इसकी कल्पना करें। ये आरम्भिक कलीसिया के दो महानायक हैं। एक अर्थ में, पौलुस किसी भी मनुष्य से बढ़कर बरनबास का ऋणी था; उसके जीवन पर बरनबास का प्रभाव अविस्मरणीय था, और यहाँ बरनबास मसीहियत में मसीह के सर्वकालिक महानतम दासों में एक, पौलुस से अलग हो रहा है, और इस मतभेद के कारण वे अलग हो जाते हैं। यह अच्छा नहीं था।

प्रेरितों के काम 15:28 के बारे में सोचें जहाँ लिखा है कि उन्होंने प्रार्थना की और पवित्र आत्मा और हमें यह निर्णय अच्छा लगा। इस परिच्छेद में कहीं भी आप यह नहीं देखते हैं कि पौलुस और बरनबास ने प्रार्थना की और कहा कि पवित्र आत्मा और हमें अच्छा लगा कि हम अलग हो जाएँ। नहीं, यह एक मतभेद था, एक विभाजन था। यीशु ने इसके लिए प्रार्थना नहीं की थी। यूहन्ना 17 में, यीशु ने प्रार्थना कि वे एक हों जैसा पिता और वह एक है, परन्तु पौलुस और बरनबास एक नहीं हैं। वे अलग हो रहे हैं, परन्तु मैं चाहता हूँ आप इसे देखें, परमेश्वर अपने अनुग्रह के द्वारा उस विवाद पर जय पाता है जिसे हम कलीसिया के अन्दर उत्पन्न करते हैं। हम इसे उत्पन्न करते हैं।

हम में एक–दूसरे से असहमत होने की प्रवृत्ति है। हम में एक–दूसरे से विभाजित होने की प्रवृत्ति है। यह हमारे बीच में पाप और अपूर्णता का परिणाम है। भाइयो और बहनो, हम ईमानदार रहें कि हमारे बीच में भी असहमत और विभाजित होने की प्रवृत्ति है। कितनी अधिक नई कलीसियाओं की शुरूआत वास्तव में कलीसियाओं के विभाजन के कारण होती है? हम ऐसा ही करते हैं। यह कलीसिया स्थापना का भाग है। यह परमेश्वर की कलीसिया स्थापना की रणनीति नहीं है। हम अलग होते हैं, और हम दूसरी, तीसरी, चौथी और पाँचवीं कलीसिया शुरू करते हैं, लेकिन वहाँ भी कोई तालमेल नहीं रहता है, क्योंकि आप वहाँ हैं, और यही समस्या का कारण है। हमारे अन्दर का पाप मतभेद और विभाजन को उत्पन्न करता है।

एक दिन आ रहा है जब हम असहमत नहीं होंगे, उसके साथ होने पर हम पूरी तरह से संगठित होंगे, और हम उसके चेहरे को देखेंगे और हम आपस में एक होंगे। हम उसके लिए कार्य करते हैं। ऐसा नहीं होना

चाहिए कि हम प्रेरितों के काम 15 की इस बात को कलीसिया में मतभेद और विभाजन के लिए लाइसेन्स के रूप में लें। "पौलुस और बरनबास में भी मतभेद हुआ और वे अलग हो गए, हम भी वैसा ही कर रहे हैं।"

नहीं। इफिसियों 4, *"मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।"* यह पवित्रशास्त्र की एक आज्ञा है। यह असहमति का लाइसेन्स नहीं है, परन्तु तस्वीर यह है कि परमेश्वर अपने अनुग्रह के द्वारा उस विवाद पर जय पाता है जिसे हम कलीसिया में उत्पन्न करते हैं। आने वाले दिनों में आप देखते हैं कि यूहन्ना मरकुस बरनबास के संरक्षण में आता है और एक अच्छा सुसमाचार लिखता है। वह हमारी बाइबल में शामिल है। 1 पतरस 5 में लिखा है कि उसने सेवकाई में पतरस की बहुत सहायता की थी। पौलुस भी, अपने जीवन के अन्त में, 2 तिमुथियुस की पत्री में तिमुथियुस को पत्र लिखता है और कहता है, "मरकुस को भी अपने साथ ले आना क्योंकि वह सेवकाई में बहुत सहायक होगा।" 1 कुरिन्थियों में हम देखते हैं कि पौलुस और बरनबास में भी मेल हो गया था।

अतः, अपने अनुग्रह के द्वारा परमेश्वर उस विवाद पर जय पाता है जिसे हम कलीसिया में उत्पन्न करते हैं और <u>अपनी महिमा के लिए परमेश्वर उस सताव को ठहराता है जिसे हम कलीसिया के बाहर सहते हैं।</u> प्रेरितों के काम 16 में, पौलुस लुस्त्रा में आता है और वहाँ तिमुथियुस नामक एक चेला है। संभवतः उस समय वह किशोर था और हम जानते हैं कि आने वाले पृष्ठों में तिमुथियुस के साथ पौलुस का संबंध बढ़ता है। उनका साथ और सुसमाचार में उनकी सहभागिता बढ़ती जाती है।

अब, मैं एक सवाल पूछना चाहता हूँ कि, "तिमुथियुस विश्वास में कैसे आया?" हम जानते हैं कि उस पर उसकी माता और नानी का बहुत अधिक प्रभाव था, परन्तु मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ एक कदम और गहराई में चलें। तिमुथियुस कहाँ है? तिमुथियुस लुस्त्रा नामक नगर में है। क्या आपको याद है जब पौलुस लुस्त्रा में था तो वहाँ क्या हुआ था? प्रेरितों के काम 14:19 की ओर आएँ। पौलुस लुस्त्रा में प्रचार कर रहा है और सुनें क्या होता है।

प्रेरितों के काम 14:19, *"परन्तु कितने यहूदियों ने अन्ताकिया और इकुनियम से आकर लोगों को अपनी ओर कर लिया, और पौलुस को पत्थरवाह किया, और मरा समझकर उसे नगर के बाहर घसीट ले गए।"* निःसन्देह, वह मरा नहीं था लेकिन उन्होंने उसे यहाँ तक पत्थरवाह किया कि उन्हें लगा वह मर गया है। हम नहीं जानते कि तिमुथियुस ने इसे देखा या नहीं। परन्तु, उसने सुना जरूर होगा। हम नहीं जानते कि

उसकी माता और नानी ने इसे देखा या सुना था, लेकिन लुस्त्रा में पौलुस के जीवन में मसीह के कष्ट के प्रदर्शन की इस तस्वीर का, तिमुथियुस के मसीह में आने में कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य था।

यहीं पर मैं चाहता हूँ कि आप उस प्रारूप के बारे में सोचें जिसे हम यहाँ प्रेरितों के काम की पुस्तक में देख रहे हैं। स्तिफनुस को पत्थरवाह किया जाता है, और वहाँ कौन खड़ा है? पौलुस वहाँ खड़ा है। स्तिफनुस को पत्थरवाह करते समय पौलुस वहाँ खड़ा था, और परमेश्वर स्तिफनुस के पत्थराव का प्रयोग करते हुए, दो अध्यायों के बाद, पौलुस को परिवर्तन या उद्धार की ओर लाता है। फिर, पौलुस पर पत्थराव, अन्ततः तिमुथियुस को मसीह के विश्वास में लाता है और वह उसके साथ सहभागी बन जाता है।

मुझे यह पसन्द है। शैतान अन्दर और बाहर से कलीसिया पर हमला करने का प्रयास कर रहा है। अन्दरः कलीसिया के विवाद। परमेश्वर ने कहा, "यह मतभेद अच्छा नहीं है," लेकिन परमेश्वर उसका उपयोग करेगा। तो परमेश्वर क्या कहता है? "कोई बात नहीं, अब एक नहीं, दो दल सुसमाचार के साथ जाएँगे। ये ले शैतान। अब, तू पौलुस को पत्थरवाह करेगा? उसके द्वारा मैं तिमुथियुस को विश्वास में लाऊँगा, और यहाँ से आगे के लिए उसे सेवकाई में पौलुस का साथी बना दूँगा।" आप इस परमेश्वर की महिमा को बढ़ने से नहीं रोक सकते हैं।

तस्वीर यह है कि हम परमेश्वर के लोगों से प्रेम करते हैं। यदि मैं कहूँ कि "मुझ में परमेश्वर की महिमा के लिए उत्सा है," और परमेश्वर के लोगों से प्रेम न रखूँ, तो इसका कोई मतलब नहीं है। इसलिए, आइए हम एक—दूसरे से प्रेम करें। आइए हम हाथ मिलाएँ। आइए हम एक बात के लिए एकीकृत उत्साह के साथ एक—दूसरे से जुड़ें, और परमेश्वर के लोगों से प्रेम करें।

हम परमेश्वर के आत्मा के पीछे चलते हैं।

दूसरा, हम परमेश्वर के आत्मा के पीछे चलते हैं। अगले कुछ वचन बहुत गहरे हैं। एक लेखक ने कहा, "इतिहास में वास्तव में विश्वसनीय मोड़ बहुत कम हैं, परन्तु निश्चित रूप से मकिदुनिया का दर्शन उनमें से एक है।" अब हम जो पढ़ने जा रहे हैं उसी के कारण आज पश्चिम में सुसमाचार है।

प्रेरितों के काम 16:6 कहता है,

> *वे फ्रूगिया और गलातिया प्रदेशों में से होकर गए, क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना किया। और उन्होंने मूसिया के निकट पहुँचकर, बितूनिया में जाना*

चाहा; परन्तु यीशु के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया। सो मूसिया से होकर वे त्रोआस में आए। और पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरूष खड़ा हुआ, उस से विनती करके कहता है, कि पार उतरकर मकिदुनिया में आ; और हमारी सहायता कर। उसके यह दर्शन देखते ही हमने तुरन्त मकिदुनिया जाना चाहा, यह समझकर, कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिए बुलाया है।

अब, आपने और मैं ने इसे पढ़ा। पौलुस इस मार्ग की ओर जा रहा है, और प्रभु कहता है, "नहीं, यहाँ सुसमाचार का प्रचार मत कर।" और वह दूसरे रास्ते पर जाता है, लेकिन पवित्र आत्मा उसे वहाँ जाने की अनुमति नहीं देता है। वह वहीं घूम रहा है।

संभवतः पौलुस के पास साफ–सुथरी योजनाएँ थी जब वह इन स्थानों पर कलीसियाओं को स्थिर करने के लिए निकला था। अब, पवित्र आत्मा बार–बार उसकी दिशा को बदल रहा है। क्या आपको कभी ऐसा महसूस हुआ है? क्या आपको कभी ऐसा महसूस हुआ है, आप परमेश्वर के पीछे चल रहे हैं और आप एक दिशा की ओर बढ़ रहे हैं, और परमेश्वर कहता है, "बस, अब उस दिशा में मत जाना?" आप कहते हैं, "ठीक है, मैं इस दिशा में चला जाता हूँ," और वह कहता है, "नहीं, उधर भी नहीं।" और आप सोचते हैं कि यह सब क्या हो रहा है।

यह परिच्छेद परमेश्वर की इच्छा को जानने की हमारी सारी अच्छी कहावतों को हवा में उड़ा देगा। हम नहीं जानते कि यह कैसे हो रहा है, लेकिन परमेश्वर मार्ग बदल रहा है। मैं चाहता हूँ आप यहाँ कुछ देखें, एक उदाहरण, यथार्थ की एक तस्वीर जिसे हम पूरे पवित्रशास्त्र में देखते हैं।

हम परमेश्वर के आत्मा के पीछे कैसे चलते हैं? पहला बात, हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं। पौलुस बैठा हुआ यह नहीं पूछ रहा है, "परमेश्वर आप मुझ से क्या चाहते हैं?" नहीं, लोगों को सुसमाचार की जरूरत है। नगरों को सुसमाचार की जरूरत है। कलीसियाओं को स्थिर करने की जरूरत है। बहुत कुछ करना है। इसलिए, पौलुस बैठा हुआ परमेश्वर की इच्छा की प्रतीक्षा नहीं कर रहा है। हम बैठे हुए परमेश्वर की इच्छा की प्रतीक्षा नहीं करते हैं। हम परमेश्वर की इच्छा में चलते हैं। हमारे पास आज्ञाएँ हैं। हम व्यभिचार से भागना जानते हैं। हम प्रार्थना करना और वचन में चलना जानते हैं। चेले बनाओ।

कल आप बाहर जाकर चेले बनाएँ, कल आप बाहर जाकर सुसमाचार सुनाएँ, और आप परमेश्वर की इच्छा में चल रहे हैं। आप को चिन्ता करने की जरूरत नहीं है, "क्या यह सही है?" हाँ, आपके लिए पूरे सप्ताह चेले बनाना सही है, और आप आजाद हैं। आपको तब तक प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं है कि आपकी रीढ़ की हड्डी में एक सिहरन उत्पन्न हो और आप कहें, "हाँ, अब मुझे चेले बनाने की जरूरत है।" नहीं, यह आज्ञा हमें मिल चुकी है।

इसीलिए ऑस्वाल्ड चैम्बर्स ने कहा, "एक मसीही को कभी भी यह सवाल नहीं पूछना चाहिए कि मेरे जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा क्या है?" यह सवाल कभी नहीं पूछा जाना चाहिए। यह हमारे सबसे आम सवालों में से एक है। वह कह रहा है, इसे कभी नहीं पूछना चाहिए। ऑस्वाल्ड ने कहा, "आप एक जंगल में होकर जा रहे हैं। आप कब पूछते हैं कि रास्ता कहाँ है? जब आप रास्ते से दूर हो जाते हैं, जब आप रास्ता भटक जाते हैं। इसलिए, रास्ते पर चलते रहो। परमेश्वर की इच्छा में चलते रहो। आपको पूछने की जरूरत नहीं है कि यह कहाँ है, कदम–दर–कदम परमेश्वर की इच्छा में चलते रहो।"

खूबसूरती यह हैः जब आप परमेश्वर की इच्छा में चलते हैं, और जब हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, <u>वह हमारे कदमों को दिशा देता है।</u> पौलुस को इसकी भनक भी नहीं थी कि उस रात क्या होने वाला था। उसने इसका प्रबन्ध नहीं किया था, इसकी योजना नहीं बनाई थी, या पहले से इसे नहीं जानता था। वह आज्ञा मान रहा था, और आज्ञा मानते समय, परमेश्वर ने उसकी अगुवाई की, जिसके फलस्वरूप, सुसमाचार पहली बार यूरोप में हमारे पुरखों के पास आया। उसने इसकी योजना नहीं बनाई थी। वह आज्ञा मान रहा था, और आत्मा ने अगुवाई की। क्या यह नीतिवचन 3:5–6 नहीं है? *"तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा।"* वह सीधा मार्ग निकालेगा।

परमेश्वर स्वर्ग में बैठकर अपनी इच्छा को आप से छिपाने और उसे आपके लिए कठिन बनाने की कोशिश नहीं कर रहा है। उसमें आपके जीवन में अपनी इच्छा को पूरी करने की इतनी अधिक इच्छा है कि उसने आपके अन्दर अपना आत्मा दिया है। वह आपको केवल रास्ता ही नहीं दिखाता है। वह कहता है, "मैं तेरे अन्दर रहूँगा, और तेरी सोच और इच्छाओं को बदल दूँगा, और मैं तुझे रास्ता दिखाऊँगा। तू मुझ में चल। मुझे में बना रह। मैं तेरे कदमों को दिशा दूँगा।"

अब, यह हमेशा सबसे सीधा मार्ग नहीं होता है। मेरा मतलब है, परमेश्वर पौलुस को यह दर्शन कुछ रात पहले, उसके उस दिशा में निकलने से पहले दे सकता था, परन्तु आत्मा उसे वहाँ रोकता है। इस दिशा में, आत्मा उसे शुरूआत से ही दर्शन दे सकता था, वह अपनी योजनाओं की जानकारी दे सकता था।

आपने कभी सोचा है कि काश परमेश्वर आपके जीवन में ऐसा करता? बहुत से सवाल आपके सामने हैं, और आप कहते हैं, "ठीक है, परमेश्वर की इच्छा में चलो, परन्तु अब भी ऐसी बहुत सी बातें हैं जो वचन में नहीं हैं। जैसे, मैं किस से शादी करूँ? उसका नाम यहाँ नहीं है। शायद इसमें हो, लेकिन मैं नहीं जानता कि कौनसा है; इसमें बहुत से नाम हैं। मैं क्या काम करूँ या कहाँ रहूँ? इस बात या उस बात के बारे में मैं क्या निर्णय लूँ?" आप इससे जूझ रहे हैं। इसके बारे में वचन में स्पष्टता नहीं है, और इसलिए आप इससे जूझ रहे हैं, और आप सोच रहे हैं, "कितना अच्छा होता यदि एक छोटा मकिदूनिया का दर्शन मिल जाता और अचानक ही वह मेरे सामने आ जाती।" दर्शन मिलने पर आप डेटिंग के बहुत से तनाव से बच जाते। हम ऐसा चाहते हैं, और वास्तविकता यह है कि परमेश्वर ऐसा कर सकता था, लेकिन उसने नहीं किया। शायद यहाँ केवल किसी स्थान पर जाने के निर्देशों से कुछ गहरा है। शायद गंतव्य मकिदूनिया से भी गहरा है।

शायद स्वयं परमेश्वर ही गंतव्य है। शायद उसका ज्ञान, या उसके साथ घनिष्टता और उसके साथ चलना। क्या होगा, यदि हमारे प्रश्नों के उत्तर से भी बढ़कर, वही हमारा लक्ष्य हो। यदि हम सावधान नहीं हैं, तो हम यहाँ सब कुछ स्पष्ट करने के प्रयास में इतने अधिक फँस सकते हैं कि पूरी बात से ही चूक जाएँ। पौलुस के इधर–उधर जाते समय परमेश्वर उसे बना और ढ़ाल रहा है।

अब, मैं आपके बारे में नहीं जानता, लेकिन मैं अधीर हो जाता हूँ। शायद इन बातों को परखने का प्रयास करने वाला मैं अकेला ही हूँ। मेरी पत्नी और मैं पिछले कुछ वर्षों से गोद लेने की प्रक्रिया में हैं। दो वर्ष से थोड़ा अधिक समय हुआ कि हमने प्रार्थना की और प्रभु की बाट जोही, और हमने कहा प्रभु, "क्या आप चाहते हैं कि हम बच्चा गोद लें? हम कहाँ से बच्चा गोद लें?" हमने बच्चे को गोद लेने के लिए उसकी अगुवाई को साफ रूप से महसूस किया। हमने मेज पर एक मानचित्र रखा। "देश के अन्दर, या विदेश से, कहाँ से?"

जब हमने प्रार्थना की तो हमने स्पष्टता से महसूस किया कि परमेश्वर हमें दक्षिण–पूर्वी एशिया के एक देश में जाने की अगुवाई दे रहा है। अतः, हमने उस प्रक्रिया को शुरू किया, और उन्होंने कहा कि इसमें एक

वर्ष से कम समय लगेगा। और दो वर्ष बाद, हमारी कागजी कार्यवाही नेपाल में अटकी है और कुछ नहीं हो रहा है, और उस देश में संयुक्त राज्य के लोगों के लिए बच्चों के गोद लेने पर प्रतिबन्ध है। इसलिए, दो साल से, हम दक्षिण–पूर्वी एशिया की एक छोटी बच्ची के लिए प्रार्थना करते आ रहे हैं, और कुछ नहीं हुआ। हम सोच रहे थे, "हमारा विश्वास है कि आप हमें इसी की अगुवाई दे रहे थे।"

पिछले वर्ष हमें पता चला कि हम उसके साथ–साथ एक और गोद लेने की प्रक्रिया को शुरू कर सकते हैं। हम इस देश में कागजी कार्यवाही जारी रखते हुए, किसी दूसरे देश से भी बच्चा गोद ले सकते हैं, हमने दूसरे देश में वह प्रक्रिया आरम्भ की। हम नहीं जानते कि पहले देश में प्रतिबन्ध हटेगा या नहीं। हम नहीं जानते कि नए देश में क्या होगा। हम कई बार यह सोचने लगते हैं, "यदि आप दो साल पहले ही हमें यह बात दिखा देते, तो निश्चित रूप से हमारा यह समय बच जाता।" परन्तु वास्तविकता यह है कि मेरे और मेरी पत्नी के अन्दर एक अधीरता है, जो अन्दर आने लगती है, परन्तु मैं अपने आप से और हम सबसे कहना चाहता हूँ कि हमें परमेश्वर के साथ अधीर होने की जरूरत नहीं है। वह पहले देश को खोल सकता है, और कल ही हमें बुलावा भी आ सकता है। इसी को वह नए देश में भी कर सकता है। कौन जानता है कि कल वे हर प्रकार के देशों से बच्चे ला सकते हैं? वह ऐसा कर सकता है। ऐसा नहीं है कि उसमें सामर्थ नहीं है, परन्तु यदि बात यदि किसी एक देश से बच्चे को गोद लेने से अधिक गहरी हो तो? बात यदि उसे जानने की, उस पर भरोसा रखने की और उसका आनन्द लेने की और उससे प्रेम करने की हो तो? इसलिए, उत्साही बनो।

जब हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, वह हमारे कदमों को दिशा देता है। पूरे इतिहास में, परमेश्वर यही करता है। मेरा बेटा और मैं डेविड लिविंगस्टन की जीवनी, *मिशनरी टू अफ्रीका* पढ़ रहे हैं। सुसमाचार के अफ्रीका पहुँचने में उनका अत्यधिक प्रभाव था, और हम उसे पढ़ रहे हैं। शुरूआत में, लिविंगस्टन चीन जाना चाहते थे। उस समय उन्हें कुछ भी पता नहीं था कि परमेश्वर अफ्रीका में किस प्रकार उनका उपयोग करेगा।

आधुनिक मिशन्स के जनक, विलियम कैरी का भारत में बहुत अधिक प्रभाव था और वे पोलिनेशिया के लिए निकले थे। आज बौद्ध म्यांमार में मण्डलियाँ और कलीसियाएँ अदोनीराम जडसन के कारण हैं। वह भारत के लिए निकले थे। ऐसा नहीं है कि उन सबने शुरूआत में समझने में गलती की थी। लेकिन बात यह है कि परमेश्वर हमारी भलाई और अपनी महिमा के लिए हमारे कदमों को दिशा देता है।

हम परमेश्वर के अनुग्रह पर भरोसा रखते हैं।

जब हम परमेश्वर के लोगों से प्रेम करते हैं और परमेश्वर के आत्मा पर भरोसा करते और उसके पीछे चलते हैं, तो यात्रा में, <u>हम परमेश्वर के अनुग्रह पर भरोसा रखते हैं।</u> अतः, सुसमाचार यूरोप में जा रहा है। रोम का पहला उपनिवेश फिलिप्पी उनका गंतव्य था। प्रेरितों के काम 16:11,

> *सो त्रोआस से जहाज खोलकर हम सीधे सुमात्राके और दूसरे दिन नियापुलिस में आए। वहाँ से हम फिलिप्पी में पहुँचे, जो मकिदुनिया प्रान्त का मुख्य नगर, और रोमियों की बस्ती है; और हम उस नगर में कुछ दिन तक रहे। सब्त के दिन हम नगर के फाटक के बाहर नदी के किनारे यह समझकर गए, कि वहाँ प्रार्थना करने का स्थान होगा; और बैठकर उन स्त्रियों से जो इकट्ठी हुई थी, बातें करने लगे। और लुदिया नाम थुआथीरा नगर की बैंजनी कपड़े बेचने वाली एक भक्त स्त्री सुन रही थी, और प्रभु ने उसका मन खोला, ताकि पौलुस की बातों पर चित्त लगाए। जब उसने अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया, तो हम से विनती की, कि यदि तुम मुझे प्रभु की विश्वासिनी समझते हो, तो चलकर मेरे घर में रहो; और वह हमें मनाकर ले गई।*

अब, फिलिप्पी की अगली कुछ कहानियों की ओर बढ़ने से पहले मैं यहाँ रूकना चाहता हूँ। हम देखने वाले हैं कि हमारे स्तर की परवाह न करते हुए परमेश्वर हमें उद्धार देता है। हर एक शब्द महत्वपूर्ण है, <u>हमारे स्तर की परवाह न करते हुए परमेश्वर हमें उद्धार देता है।</u> पहला, परमेश्वर उसे उद्धार देता है। परमेश्वर हमें उद्धार देता है। परमेश्वर ने उसके हृदय को खोला। लूका जान–बूझकर हमें यह दिखाना चाहता है कि यह काम प्रभु का है। सारे लोग सुन रहे थे, और प्रभु ने सुसमाचार के लिए लुदिया के मन को खोला। परमेश्वर ने यह किया। अतः, प्रभु ने एक उच्च वर्ग की एशियाई व्यवसायी महिला का मन खोला। वह एशिया माइनर की थी, जो आज का तुर्की है, और वह एक सफल व्यवसायी थी, बैंजनी वस्त्र बेचने वाली महिला और उस दिन परमेश्वर ने मसीह के लिए उसका मन खोला।

फिर, प्रभु एक निम्न वर्गीय यूनानी दास को उद्धार देता है। सामाजिक–आर्थिक रेखा के दो विपरीत स्तर। एक दासी और सफल व्यवसायी महिला, दोनों मसीह पर विश्वास करते हैं। पद 16, *"जब हम प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे, तो हमें एक दासी मिली जिस में भावी कहने वाली आत्मा थी; और भावी कहने से अपने स्वामियों के लिये बहुत कुछ कमा लाती थी।"* असल में, वह दुष्टात्माग्रस्त थी और भविष्य बताने के द्वारा अपने स्वामियों के लिए बहुत अधिक पैसा कमाती थी। मूल रूप से, वह एक आत्मिक वेश्या थी। *"वह पौलुस के और हमारे पीछे आकर चिल्लाने लगी कि ये मनुष्य परम प्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें*

उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं। वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही, परन्तु पौलुस दुःखी हुआ, और मुँह फेरकर उस आत्मा से कहा, मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूँ, कि उस में से निकल जा और वह उसी घड़ी निकल गई।"

लुदिया के समान या फिलिप्पी दारोगा के समान यह नहीं बताया गया है कि उसने उद्धार के लिए मसीह पर विश्वास किया, परन्तु अधिकाँश विद्वान, इन तीनों कहानियों को एक साथ मिलाकर, यह निष्कर्ष निकालते हैं कि उसे मसीह के नाम से छुटकारा मिला था और संभवतः उसने भी मसीह को ग्रहण किया और अब वह फिलिप्पी की कलीसिया का हिस्सा है। हमें निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकते हैं, लेकिन हमें इसका भरोसा है।

> *जब उसके स्वामियों ने देखा, कि हमारी कमाई की आशा जाती रही, तो पौलुस और सीलास को पकड़ कर चौक में प्रधानों के पास खींच ले गए। और उन्हें फौजदारी के हाकिमों के पास ले जाकर कहा; ये लोग जो यहूदी हैं, हमारे नगर में बड़ी हलचल मचा रहे हैं। और ऐसे व्यवहार बता रहे हैं, जिन्हें ग्रहण करना या मानना हम रोमियों के लिए ठीक नहीं। तब भीड़ के लोग उनके विरोध में इकट्ठे होकर चढ़ आए, और हाकिमों ने उनके कपड़े फाड़कर उतार डाले, और उन्हें बेंत मारने की आज्ञा दी। और बहुत बेंत लगवाकर उन्हें बन्दीगृह में डाला; और दारोगा को आज्ञा दी, कि उन्हें चौकसी से रखे। उसने ऐसी आज्ञा पाकर उन्हें भीतर की कोठरी में रखा और उनके पाँव काठ में ठोंक दिए।*

अब तक हमने दो परिवर्तनों को देखा हैः एक उच्च वर्ग की एशियाई व्यवसायी महिला का और एक निम्न वर्ग की यूनानी दासी का। और अब, एक मध्यम वर्गीय रोमी दारोगा।

> *आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और बन्धुए उन की सुन रहे थे। कि इतने में एकाएक बड़ा भुईंडोल हुआ, यहाँ तक कि बन्दीगृह की नींव हिल गई, और तुरन्त सब द्वार खुल गए; और सब के बन्धन खुल पड़े। और दारोगा जाग उठा, और बन्दीगृह के द्वार खुले देखकर समझा कि बन्धुए भाग गए, सो उसने तलवार खींचकर अपने आप को मार डालना चाहा।*

यदि वे भाग जाते तो वह मर जाता।

परन्तु पौलुस ने ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा; अपने आप को कुछ हानि न पहुँचा, क्योंकि हम सब यहाँ हैं। तब वह दीया मँगवाकर भीतर लपक गया, और काँपता हुआ पौलुस और सीलास के आगे गिरा। और उन्हें बाहर लाकर कहा, हे साहिबो, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ? उन्होंने कहा, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। और उन्होंने उस को, और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया। और रात को उसी घड़ी उसने उन्हें ले जाकर उन के घाव धोए, और उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया। और उसने उन्हें अपने घर में ले जाकर, उनके आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया।

वाह! क्या दृश्य है!

जब दिन हुआ तक हाकिमों ने प्यादों के हाथ कहला भेजा कि उन मनुष्यों को छोड़ दो। दारोगा ने ये बातें पौलुस से कह सुनाई, कि हाकिमों ने तुम्हारे छोड़ देने की आज्ञा भेज दी है, सो अब निकलकर कुशल से चले जाओ। परन्तु पौलुस ने उससे कहा, उन्होंने हमें जो रोमी मनुष्य हैं, दोषी ठहाराए बिना, लोगों के सामने मारा, और बन्दीगृह में डाला, और अब क्या चुपके से निकाल देते हैं? ऐसा नहीं, परन्तु वे आप आकर हमें बाहर ले जाएँ। प्यादों ने ये बातें हाकिमों से कह दीं, और वे यह सुनकर कि रोमी हैं, डर गए। और आकर उन्हें मनाया, और बाहर ले जाकर विनती की कि नगर से चले जाएँ। वे बन्दीगृह से निकल कर लुदिया के यहाँ गए, और भाइयों से भेंट करके उन्हें शान्ति दी, और चले गए।

क्या बात है। एक तरफ भूकम्प आ रहा है और वे गा रहे हैं। वे भजन गा रहे हैं और भूकम्प हो रहा है। यह सब क्यों हुआ? उन्हें बन्दीगृह में डाल दिया गया था, उनकी पीठ छलनी थी, शरीर में दर्द हो रहा था, गीत गा रहे थे, भूकम्प आता है, और यह सब एक फिलिप्पी दारोगा और उसके परिवार को मसीह में लाने के लिए।

जब आप लुदिया, दासी, और दारोगा की इन कहानियों को पढ़ते हैं, तो क्या आप का ध्यान उन सारी बातों की ओर नहीं जाता है जिन्हें परमेश्वर ने आपके जीवन में किया, और उन लोगों पर जिन्हें वह समय–समय पर आपके जीवन में लेकर आया, ताकि आप उस पल में सुसमाचार सुनें जब परमेश्वर आपके मन को खोलकर आपको अपनी ओर खींचता है? उसी ने यह सब किया, ताकि आप मसीह को जान सकें और प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करके उद्धार पा सकें। हमारे किसी भी कार्य के आधार पर नहीं। हम तो उससे दूर

भाग रहे थे, पाप में मरे हुए थे, अपने आप को बचाने में असमर्थ थे, और परमेश्वर ने ही यह सब किया है। हमारे स्तर की परवाह न करते हुए वह हमें उद्धार देता है, और हमारी परिस्थितियों की परवाह न करते हुए, वह हमें एक गीत देता है।

दासी और फिलिप्पी के दारोगा के लिए यह बहुत अच्छा समाचार था, परन्तु पौलुस और सीलास के लिए यह कठिन था। उनके कपड़े उतार दिए गए, उन्हें पीटा गया, और रोमी कारागृह में डाल दिया गया। उस विचार का क्या हुआ कि परमेश्वर की इच्छा के बीच में होना सबसे सुरक्षित स्थान है? बाइबल में एक भी वचन ऐसा नहीं कहता है। उनके लिए सबसे खतरनाक स्थान था, पश्चिम में यूरोप की ओर जाते समय मकिदुनिया में होना। यह उनके लिए खतरनाक था, फिर भी, बन्दीगृह में बैठे हुए उन्हें पता था कि अन्तिम रूप से वे रोम के नहीं, परन्तु मसीह के बन्दी थे।

उनका जीवन उसके हाथों में था, और वह इन सारी बातों का प्रयोग उनकी भलाई के लिए, दूसरों की भलाई के लिए, दूसरों के उद्धार के लिए और अपनी महिमा के लिए कर रहा था। इसे जानेंः साफ है कि हम में से कोई भी इस समय छलनी पीठ के साथ फिलिप्पी के बन्दीगृह में नहीं है। साथ ही, क्या मैं आपको याद दिला सकता हूँ कि आप इस समय चाहे किसी भी परिस्थिति में क्यों न हों, चाहे भविष्य में किसी भी परिस्थिति में क्यों न हों, परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी अन्धेरी और दर्दनाक क्यों न हों, मसीही, तुम्हारे पास हमेशा एक गीत होगा। आपके पास हमेशा एक गीत होगा, चाहे आपकी परिस्थति कितनी भी कठिन क्यों न हो, चाहे आपको कुछ भी क्यों न खोना पड़े, चाहे किसी व्यक्ति को खोना पड़े, चाहे जो भी हो, आपके पास हमेशा एक गीत होगा क्योंकि आपका जीवन सर्वोच्च परमेश्वर के हाथों में है, और उसका वायदा है कि इसका प्रयोग वह आपकी भलाई के लिए, दूसरों की भलाई के लिए और अपनी महिमा के लिए करेगा और उसी के लिए हम उत्साह से भरे हैं। इस जीवन में सुख या आराम से भी बढ़कर, हम उसकी महिमा के लिए उत्साही हैं, इसलिए हम परमेश्वर के अनुग्रह पर भरोसा रखते हैं।

हम परमेश्वर के सत्य की घोषणा करते हैं।

हम परमेश्वर के सत्य की घोषणा करते हैं। यह हमें प्रेरितों के काम 17 की ओर लाता है, जिसे कुछ लोग पूरे नये नियम में सबसे महान मिशनरी अभिलेख कहते हैं। यह मकिदुनिया की राजधानी, थिस्सलुनीके में आरम्भ होता है। पद 1 कहता है,

> *फिर वे अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके में आए, जहाँ यहूदियों का एक आराधनालय था। और पौलुस अपनी रीति के अनुसार उनके पास गया, और तीन सब्त के*

दिन पवित्र शास्त्रों से उनके साथ विवाद किया। और उनका अर्थ खोल–खोलकर समझाता था, कि मसीह का दुख उठाना, और मरे हुओं में से जी उठना, अवश्य था; और यही यीशु जिसकी मैं तुम्हें कथा सुनाता हूँ, मसीह है। उनमें से कितनों ने, और भक्त यूनानियों में से बहुतेरों ने और बहुत सी कुलीन स्त्रियों ने मान लिया, और पौलुस और सीलास के साथ मिल गए। परन्तु यहूदियों ने डाह से भरकर बाजारू लोगों में से कई दुष्ट मनुष्यों को अपने साथ में लिया, और भीड़ लगाकर नगर में हुल्लड़ मचाने लगे, और यासोन के घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगों के सामने लाना चाहा। और उन्हें न पाकर, वे यह चिल्लाते हुए यासोन और कितने और भाइयों को नगर के हाकिमों के सामने खींच लाए, कि ये लोग जिन्होंने जगत को उलटा–पुलटा कर दिया है, यहाँ भी आए हैं। और यासोन ने उन्हें अपने यहाँ उतारा है, और ये सब के सब यह कहते हैं कि यीशु राजा है, और कैसर की आज्ञाओं का विरोध करते हैं। उन्होंने लोगों को और नगर के हाकिमों को यह सुनाकर घबरा दिया। और उन्होंने यासोन और बाकी लोगों से मुचलका लेकर उन्हें छोड़ दिया।

आगे पढ़ते रहें।

भाइयों ने तुरन्त रात ही रात पौलुस और सीलास को बिरीया में भेज दियाः और वे वहाँ पहुँचकर यहूदियों के आराधनालय में गए। ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूँढ़ते रहे कि ये बातें यों ही हैं, कि नहीं। सो उनमें से बहुतों ने, और यूनानी कुलीन स्त्रियों में से, और पुरूषों में से बहुतेरों ने विश्वास किया। किन्तु जब थिस्सलुनीके के यहूदी जान गए, कि पौलुस बिरीया में भी परमेश्वर का वचन सुनाता है, तो वहाँ भी आकर लोगों को उसकाने और हलचल मचाने लगे। तब भाइयों ने तुरन्त पौलुस को विदा किया, कि समुद्र के किनारे चला जाए; परन्तु सीलास और तीमुथियुस वहीं रह गए। पौलुस के पहुँचाने वाले उसे एथेन्स तक ले गए, और सीलास और तीमुथियुस के लिए यह आज्ञा लेकर विदा हुए, कि मेरे पास बहुत शीघ्र आओ।

आप इसे देखें। पौलुस जहाँ भी जाता है वहाँ यही होता है। शुरूआत हमेशा यहीं से होती है। वचन के प्रचार से शुरूआत होती है; वचन बोला जाता है। इन सारी कहानियों में सब कुछ इसी पर आधारित है। पौलुस आराधनालय में, सड़कों पर, और जहाँ भी संभव हो, जाता है और वचन का प्रचार करता है। पद 2 में लिखा है, थिस्सलुनीके में "वह पवित्रशास्त्रों में से उनके साथ विवाद करता है। और उन्हें वचन से

समझाता है कि मसीह का दुख उठाना और मृतकों में से जी उठना अवश्य था।" उन्होंने इस पर विश्वास किया। कुछ लोगों ने मान लिया। इसी कारण 1 थिस्सलुनीकियों 1 में पौलुस कहता है, "तुमने वचन को बड़े आनन्द, बड़े क्लेश और पवित्र आत्मा की सामर्थ में ग्रहण किया है।" तुमने वचन को ग्रहण किया है।

वह बिरिया जाता है। वहाँ पवित्रशास्त्र से सिखाता है, और वे उसे ग्रहण करते हैं। वे हर दिन पवित्रशास्त्रों में से खोजते हैं। यह सब परमेश्वर की वचन की स्वीकृति और परमेश्वर के वचन की शिक्षा पर निर्भर है। अब, स्पष्ट है कि इस प्रक्रिया में हर कोई खुश नहीं है। इसलिए, ये यहूदी थिस्सलुनीके में उसका विरोध करने लगते हैं और फिर बिरिया में भी ऐसा ही करते हैं, परन्तु मैं चाहता हूँ आप देखें कि थिस्सलुनीके में वे क्या कहते हैं। वे यासोन और दूसरे भाइयों के पास जाते हैं; उन्हें नगर से लाते हैं। क्या हो रहा है? उनके वचनों को सुनें। पद 6 कहता है, *"ये लोग जिन्होंने जगत को उलटा–पुलटा कर दिया है।"* मुझे नहीं लगता कि वह ऐसा चाहता था, परन्तु यह एक प्रशंसा है। पौलुस और सीलास अन्यजातियों के संसार में हलचल मचाने के लिए विख्यात थे। यह अच्छा है। मैं और हम सब एक अन्यजातीय संसार में हलचल मचाने के लिए विख्यात होना चाहते हैं। हम अन्धकार की ताकतों के बीच हलचल मचाने के लिए विख्यात होना चाहते हैं।

क्या आप नहीं चाहते कि अन्धकार की ताकतें कहें, "ये लोग हमें परेशान कर रहे हैं।" हाँ। जब इस वचन का प्रचार होता है, तो यह संसार बदलता है। भाइयो और बहनो, यह वचन अच्छा है। इस वचन में साम्राज्यों को सिर के बल खड़ा कर देने की ताकत है। वे प्रचार कर रहे हैं, और कह रहे हैं, "कैसर के अलावा एक राजा है।" बिल्कुल, एक और राजा है। एक और साम्राज्य है जो बढ़ रहा है, और जब इस वचन का प्रचार किया जाता है तो यह हलचल मचाता है और दिलों को बदलता है।

मूर्तिपूजा के बीच में हम परमेश्वर की स्तुति चाहते हैं।

जहाँ भी हम जाते हैं वहाँ परमेश्वर के सत्य का प्रचार करते हैं, यहाँ तक कि शत्रुतापूर्ण क्षेत्रों में भी। और हम एथेन्स की ओर आते हैं। पद 16 कहता है, *"जब पौलुस एथेन्स में उन की बाट जोह रहा था, तो नगर को मूरतों से भरा हुआ देखकर उसका जी जल गया।"* एक पल के लिए रूकें। मैं आपको एथेन्स की पृष्ठभूमि के बारे में थोड़ा बताना चाहता हूँ। एथेन्स रोम का एक सांस्कृतिक, दार्शनिक केन्द्र था और एक प्रकार से एक प्रमुख पर्यटन केन्द्र भी था। यहीं पर सारे विचारों, विचारधाराओं पर वाद–विवाद, विचार–विमर्श किया जाता था, एक खूबसूरत और उत्कृष्ट नगर, लेकिन पौलुस प्रभावित नहीं हुआ क्योंकि

जब उसने देखा तो सारा नगर मूरतों से भरा हुआ था। इतिहासकारों का कहना है कि एथेन्स में लगभग 30,000 अलग–अलग देवताओं की मूरतें थी। हर जगह मूरतें थी।

एक इतिहासकार ने कहा है, "एथेन्स में मनुष्य की बजाय एक देवता को पाना आसान है।" और पौलुस इस पर्यटन केन्द्र में है और वह यह नहीं कहता है, "चलो, मेरे पास एक दिन है जब मैं एथेन्स का आनन्द ले सकता हूँ।" नहीं, पौलुस का जी जल गया। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है, उसमें पवित्र क्रोध उत्पन्न होता है। क्यों? क्योंकि पौलुस एक ऐसी परिस्थिति को देखता है जहाँ यह मूर्ति, और वह मूर्ति, और यह देवता और वह देवता स्तुति और आदर और भक्ति और भेंट को ग्रहण कर रहे हैं, और पौलुस जानता है कि स्तुति और आदर और भक्ति और भेंट के योग्य केवल एक ही है। अतः, मूर्तिपूजा के बीच में, यह एक बात के प्रति उत्साह है। मूर्तिपूजा के बीच में हम परमेश्वर की स्तुति चाहते हैं।

अतः, पौलुस को जो भी मिलता है वह उससे बात करने लगता है। पद 17 कहता है,

> *सो वह आराधनालय में यहूदियों और भक्तों से और चौक में जो लोग मिलते थे, उनसे हर दिन वाद–विवाद किया करता था। तब इपिकूरी और स्तोईकी पण्डितों में से कितने उससे तर्क करने लगे, और कितनों ने कहा, यह बकवादी क्या कहना चाहता है? परन्तु औरों ने कहा; वह अन्य देवताओं का प्रचारक मालूम पड़ता है, क्योंकि वह यीशु का, और पुनरूत्थान का सुसमाचार सुनाता था। तब वे उसे अपने साथ अरियुपगुस पर ले गए।*

और अब, आराधनालय और सड़कों से लेकर शासक दार्शनिकों तक, हर जगह एक वाद–विवाद हो रहा है।

"क्या हम जान सकते हैं, कि यह नया मत जो तू सुनाता है, क्या है? क्योंकि तू अनोखी बातें हमें सुनाता है, इसलिए हम जानना चाहते हैं कि इनका अर्थ क्या है? इसलिए कि सब एथेन्सवासी और परदेशी जो वहाँ रहते थे, नई–नई बातें कहने और सुनने के सिवाय और किसी काम में समय नहीं बिताते थे।" लूका एथेन्स के बारे में अपना विचार हमें बताता है।

आप पद 22 पर आते हैं और पौलुस बोलना शुरू करता है। अब, यह देखने से पहले कि वह क्या कहता है, मैं चाहता हूँ कि आप जल्दी से इसे समझें क्योंकि यह बहुत गहरा है। पौलुस प्रचार कर रहा है। वह एथेन्स में हर किसी के पास जा रहा है और प्रचार कर रहा है। इस कारण वह एथेन्स के सबसे बड़े स्थान में पहुँचता है। वह ऐसा क्यों कर रहा है? आखिर उसकी प्रेरणा क्या है?

मैं यह दिखाना चाहता हूँ कि उसकी अन्तिम प्रेरणा उसका दायित्व नहीं था। "मेरा काम प्रचार करना है। मुझ से यही अपेक्षित है, इसलिए मैं यह कर रहा हूँ।" आज्ञापालन की प्रेरणा भी ठीक है, लेकिन यहाँ पौलुस उसके कारण आगे नहीं बढ़ रहा है। उसकी अन्तिम प्रेरणा करूणा नहीं है। पद यह नहीं कहता है, "पौलुस ने अपने चारों ओर के लोगों की आवश्यकताओं को देखा।" उसके चारों ओर सारे जरूरतमन्द लोग हैं, उसके चारों ओर मूर्तिपूजा करने वाले लोग हैं, जो मसीह को नहीं जानते हैं, जो परमेश्वर से दूर हैं, अपने पाप में मरे हुए हैं, और उनका मन अन्धेरा है। पौलुस यह सब देखता है, परन्तु यह बात उसे प्रेरित नहीं करती है।

पौलुस की अन्तिम प्रेरणा है परमेश्वर की महिमा के लिए उसका उत्साह। यशायाह 42:8 में परमेश्वर कहता है, *"अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूँगा और जो स्तुति मेरे योग्य है वह खुदी हुई मूरतों को न दूँगा।"* यह परमेश्वर का उत्साह है; परमेश्वर में भी अपनी महिमा और स्तुति के लिए उत्साह है। पौलुस को आगे की ओर ले जाने वाली उसकी अन्तिम प्रेरणा, परमेश्वर की महिमा थी। एक पल के लिए यहाँ रूककर, एक पासबान के रूप में मैं बताना चाहता हूँ कि इस सप्ताह जब हम अपने शहर में जाते हैं, तो शायद हम अपने शहर में 30,000 मूर्तियों को न देखें, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम मूर्तिपूजा से नहीं घिरे हैं।

हम हमारे चारों ओर के समुदाय में और हमारे अपने जीवनों में एक भय, दोनों के संबंध में हमारी अपनी मूर्तिपूजा के प्रति अन्धे हैं। हमारा प्रेम धन, लैंगिकता, पद, ताकत, घमण्ड, मनोरंजन, खेल, मस्ती, और संपत्तियों की ओर खिंचा हुआ है और हमारी भक्ति उससे दूर हो रही है जो हमारे सारे प्रेम और हमारी सारी भक्ति के योग्य है। इसलिए, हमारे अपने जीवनों में, आइए हम अपने प्रेम और अपनी भक्ति की सुरक्षा के लिए उत्साही बनें। आइए हम हर एक ऐसी बात से लड़ें जो हमारे अन्दर पैठकर परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम और हमारी भक्ति को चुरा लेती है, और हमारे शहर तथा दूसरे देशों के लोग हमारे उत्साह को देखने पाएँ।

तो, हमें चेले बनाने की जरूरत है। मैं इसे हमारे सामने रखना चाहता हूँ। हाँ, हमें चेले बनाने की जरूरत है। यह एक आज्ञा है। यहाँ इस शहर में और संसार भर में 6,000 से अधिक जातियाँ हैं जिनके पास सुसमाचार अब तक नहीं पहुँचा है। मैं चाहता हूँ हम उन बातों को जानें, लेकिन हमें प्रेरित करने वाली बात

न तो उन लोगों की जरूरत के प्रति तरस है और न ही दायित्व या आज्ञा का पालन। हमारी प्रेरक शक्ति यह है कि हमारे हृदय परमेश्वर की महिमा के लिए उत्साह से जकड़े हुए हैं।

इसी ने उसे प्रेरणा दी और जब उसे इन लोगों के सामने बोलने का मौका मिलता है, तो सुनें वह क्या कहता है, पद 22, *"तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़ा होकर कहा; हे एथेन्स के लोगो मैं देखता हूँ, कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानने वाले हो।"* वह उन्हें मक्खन लगाना शुरू करता है। *"क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, "अनजाने ईश्वर के लिए।" सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूँ।"*

पद 24, *"जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता।"* हम तेजी से आगे बढ़ेंगे। <u>वह जगत का रचयिता है।</u> पौलुस यहीं से शुरू करता है। पौलुस कहता है, "क्या तुम्हें लगता है कि तुम परमेश्वर को बना सकते हो? यथार्थ यह है कि तुम्हें और तुम्हारे आस–पास की सारी वस्तुओं को परमेश्वर ने बनाया है।" सुसमाचार यहीं से शुरू होता है। सुसमाचार परमेश्वर से शुरू होता है।
"न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सबको जीवन और श्वास और सब कुछ देता है।" <u>वह जीवन का रखवाला है।</u> परमेश्वर आप पर निर्भर नहीं है। आप परमेश्वर पर, जगत के रचयिता पर, जीवन के रखवाले पर निर्भर हैं। <u>वह जातियों का शासक है</u>, उसने एक व्यक्ति से प्रत्येक जाति को बनाया। *"उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिए बनाई हैं; और उनके ठहराए हुए समय, और निवास के सिवानों को इसलिए बान्धा है..."* वह जातियों का शासक है और <u>जरूरतमन्द का उद्धारकर्ता है।</u>

पद 27 कहता है, *"कि वे परमेश्वर को ढूँढ़ें, कदाचित उसे टटोलकर पा जाएँ तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं!"* जगत का रचयिता, जीवन का रखवाला, जातियों का शासक, और वह आप से दूर नहीं है। वह आपके पास आया है। <u>वह हम में से हर एक का पिता है।</u> *"क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते–फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, कि हम तो उसी के वंश भी हैं।"*

वह हम में से हर एक का पिता है, और <u>वह हम सबका राजा है।</u> *"सो परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं, कि ईश्वरत्व, सोने या रूपे या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और*

कल्पना से गढ़े गए हों।" वह आप का राजा है। आप का उस पर अधिकार नहीं है। उसका आप पर अधिकार है, और यह आपको इस यथार्थ की ओर लाता है कि वह संसार का न्यायी है।

पद 30 कहता है, *"इसलिए परमेश्वर ने अज्ञानता के समयों पर ध्यान नहीं दिया, पर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।"* पौलुस कहता है, "परमेश्वर, यीशु मसीह के द्वारा तुम में से हर एक का न्याय करेगा, जिसे उसने मृतकों में से जीवित किया है।" यह कोई अच्छी लगने वाली बात नहीं है जो पौलुस कहता है।

इसलिए पद 32 कहता है, *"मरे हुओं के पुनरूत्थान की बात सुनकर कितने तो ठट्ठा करने लगे, और कितनों ने कहा, यह बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे। इस पर पौलुस उनके बीच में से निकल गया। परन्तु कई एक मनुष्य उसके साथ मिल गए, और विश्वास किया, जिनमें दियुनुसियुस जो अरियुपगुस का सदस्य था, और दमरिस नाम एक स्त्री थी, और उनके साथ और भी लोग थे।"*

यह गीत आपके होठों से इस शहर और सारी जातियों के बीच में गूँजने पाए। परमेश्वर ही रचयिता और शासक और रखवाला और राजा है। वह हम में से हर एक का पिता है, हम सबके ऊपर राजा है, और वह संसार का न्याय करेगा। यही हमारा प्रचार है। जब हम मूर्तिपूजा को देखते हैं तो चाहते हैं कि परमेश्वर की स्तुति का प्रसार हो।

अनैतिकता के बीच में, हम सुसमाचार की सामर्थ पर विश्वास करते हैं।

अन्ततः, अनैतिकता के बीच में, हम सुसमाचार की सामर्थ पर विश्वास करते हैं। वहाँ से पौलुस कुरिन्थ में जाता है। *"इसके बाद पौलुस एथेन्स को छोड़कर कुरिन्थ में आया।"* एक व्यवसायिक महानगर।

> *वहाँ अक्विला नामक एक यहूदी मिला, जिसका जन्म पुन्तुस में हुआ था। वह अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ इटली से हाल ही में आया था, क्योंकि क्लौदियुस ने सब यहूदियों को रोम से निकल जाने की आज्ञा दी थी। इसीलिए वह उनके यहाँ गया। उसका और उनका एक ही उद्यम था; इसलिए वह उनके साथ रहा और वे काम करने लगे; और उनका उद्यम तम्बू बनाने का था। वह हर एक सब्त के दिन आराधनालय में वाद–विवाद करके यहूदियों और यूनानियों को भी समझाता था।*

एक पल के यहाँ रूकें। कुरिन्थः एक महानगर, एक विशाल शहर; सांस्कृतिक विविधता वाला एक बन्दरगाह है, जो अनैतिकता से भरा है। एफ्रोडाइट प्रेम की देवी थी, और एक पहाड़ी पर बना एफ्रोडाइट का मन्दिर पूरे नगर में दिखाई देता था। मन्दिर में एक हजार देवदासियाँ रहती थी जो हर रात देह व्यापार के लिए नीचे नगर में आया करती थीं। अब आप जानते हैं कि 1 और 2 कुरिन्थियों में पौलुस बार–बार यह क्यों कहता है, "व्यभिचार से भागो। उनमें से निकल आओ और उनसे दूर रहो। तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है।"

वह नगर अनैतिकता से भरा था और वहाँ रहना आसान नहीं था। आप इसके बारे में सोचें। आप आज के समय में बड़े नगरों में, महानगरों में जाने के बारे में सोचें, न्यूयॉर्क हो या लॉस ऐंजलस, मुम्बई हो या दिल्ली, मेक्सिको हो या लन्दन, ये सारे महानगर लोगों की उमड़ती भीड और अनैतिकता से भरे हैं, और आप सोचने लगते हैं, "मैं क्या कर सकता हूँ?"

तो, पौलुस इस नगर में है और जब वह प्रचार करना शुरू करता है तो सुनें क्या होता है। *"जब सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आए, तो पौलुस वचन सुनाने की धुन में लगकर यहूदियों को गवाही देता था कि यीशु ही मसीह है। परन्तु जब वे विरोध और निन्दा करने लगे, तो उसने अपने कपड़े झाड़कर उनसे कहा; तुम्हारा लहू तुम्हारी गर्दन पर रहेः मैं निर्दोष हूँः अब से मैं अन्यजातियों के पास जाऊँगा।"* "विरोध और निन्दा" करने का शाब्दिक अर्थ है, कि उन्होंने उसके विरूद्ध युद्ध का मोर्चा खोल दिया।

अब, आप इसके बारे में सोचें। अपने आप को पौलुस की जगह रखें। इस दिनचर्या में किसी न किसी बिन्दू पर आप थक जाएँगे। हम कुरिन्थ में उस संघर्ष और सोच–विचार को देखने वाले हैं कि क्या उसे वहाँ रूकना भी चाहिए या नहीं, और सुनें क्या होता है। पद 7 कहता है, *"और वहाँ से चलकर वह तितुस युस्तुस नामक परमेश्वर के एक भक्त के घर में आया, जिसका घर आराधनालय से लगा हुआ था। तब आराधनालय के सरदार क्रिस्पुस ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया; और बहुत से कुरिन्थी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया।"*

इसे सुनें, *"और प्रभु ने रात को दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा, मत डर, वरन् कहे जा, और चुप मत रह। क्योंकि मैं तेरे साथ हूँः और कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न करेगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं। सो वह उनमें परमेश्वर का वचन सिखाते हुए डेढ़ वर्ष तक रहा।"*

अब, बात यह है, यहीं पर मैं सारी बातों को समाप्ति की ओर लाना चाहता हूँ। मुझे पता है कि मुझे इतनी जानकारी होनी चाहिए कि परमेश्वर की महिमा के लिए एकाग्रचित्त उत्साह के साथ जीने से इस जीवन में कुछ भी आसान नहीं होगा; इससे आपकी नौकरी में आसानी नहीं होगी; आप में से कुछ के घरों के लिए यह आसान नहीं होगा; इससे समुदाय में कुछ भी आसान नहीं होगा; और निश्चित रूप से तब भी यह आसान नहीं होगा जब हम संसार की अलग–अलग पृष्ठभूमियों में जाते हैं। अब, मसीह से हमें कोई दर्शन नहीं मिला है। हो सकता है आज रात आप को कोई दर्शन मिले, अच्छी बात है, परन्तु हम जानते हैं कि यहाँ हम जो देख रहे हैं वह उन सत्यों की झलक है जिन्हें परमेश्वर ने पुराने नियम और नये नियम में समान रूप से अपने लोगों को दिया है।

इसलिए, मैं आपको इससे प्रोत्साहित करना चाहता हूँ। पिछले बुधवार की रात, मैं हमारे क्षेत्र की एक कलीसिया में एक मिशन सम्मेलन के लिए प्रचार कर रहा था। हम सुसमाचार प्रचार में इस कलीसिया के सहभागी हैं और मैं इस मिशन सम्मेलन में था, और उसके बाद एक व्यक्ति मुझे खींचकर एक तरफ ले गया। वह पश्चिमी यूरोप में रहा रहा है और अब पश्चिमी यूरोप में सुसमाचार का प्रचार करने की कोशिश कर रहा है। वह पश्चिमी यूरोप के एक ठण्डे और कठोर क्षेत्र में रहता है, और उसने मुझे एक ओर ले जाकर कहा, "विविध माध्यमों के द्वारा वचन और वचन की शिक्षा को उपलब्ध करवाने के लिए मैं आप को और आपकी कलीसिया को धन्यवाद देना चाहता हूँ, क्योंकि हम एक ऐसी परिस्थिति में रहते हैं जहाँ हमारे आस–पास कोई मसीही नहीं है, और हम वचन के भूखे हैं, और हमें वचन की जरूरत है, और कलीसिया द्वारा हमें हर दिन पर तृप्त किया जा रहा है। वचन मेरे और मेरे परिवार की आहार की जरूरत को स्थिरता से पूरा कर रहा है। इसलिए, मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ।"

मैं ने और भी बहुत से लोगों से बात की है जो ऐसे ही सन्दर्भ में रहते हैं। इसलिए मैं उन लोगों को प्रोत्साहित करना चाहता हूँ जो मुझे सुन रहे हैं और जो इस समय संसार में किसी दूसरे सन्दर्भ में हैं, और इस बात से जूझ रहे हैं और सोच रहे हैं कि उन्हें वहाँ रूकना चाहिए या नहीं। वे सोच रहे होंगे कि अन्धेरे में, ठण्डे दिलों के बीच, और इन कठिन परिस्थितियों में क्या करें। अतः, मैं यह कहना चाहता हूँ। इसी को हम पूरे पवित्रशास्त्र में देखते हैं।

सबसे पहले मैं याद दिलाना चाहता हूँ कि हम भयभीत नहीं हैं। भयभीत न हों। सम्पूर्ण पुराने नियम और नये नियम में अपने लोगों के लिए परमेश्वर का यही सन्देश था। डरो मत। परमेश्वर ने हमें भय का नहीं

परन्तु सामर्थ का आत्मा दिया है। मैं जानता हूँ कि हम सोचते हैं, "नौकरी की जगह पर सुसमाचार सुनाने की बात से मैं भयभीत हो जाता हूँ। इस सन्दर्भ में या उस सन्दर्भ में, सुसमाचार सुनाने की बात पर मैं भयभीत हो जाता हूँ। संसार के दूसरे सन्दर्भों में कुछ लोगों के बीच मुझे डर लगता है। मुसलमानों के बीच में या हिन्दुओं के बीच में मुझे डर लगता है, जहाँ कीमत बहुत बड़ी है। मैं डरता हूँ। मेरा डर कैसे दूर हो सकता है?" यह हमें हमारी दूसरी बात की ओर लाता हैः हम भयभीत नहीं हैं क्योंकि हम अकेले नहीं हैं।

यीशु कहते हैं, "मैं तुम्हारे साथ हूँ।" वह इसे एक दर्शन में केवल पौलुस से ही नहीं कह रहे हैं। यीशु ने हमसे यह कहा है। "जगत के अन्त तक मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ।" परमेश्वर के बच्चे, वह आपके साथ है। आप कभी भी, किसी भी समय अकेले नहीं हैं। पौलुस अनैतिक कुरिन्थ में है, जहाँ हर कहीं अनैतिकता फैली है, और यीशु कहते हैं, "मैं तेरे साथ हूँ।" परमेश्वर की सन्तान, यहाँ और संसार के किसी भी सन्दर्भ में, आप अकेले नहीं हैं। कभी भी, किसी भी समय, आप अकेले नहीं हैं।

वह आपके साथ है, इसलिए डरो मत। हम भयभीत नहीं हैं, और हम अकेले नहीं हैं। इसलिए, हम चुप नहीं रहेंगे। बोलते रहो। चाहे ऐसा लग रहा हो कि कोई नहीं सुन रहा है, फिर भी बोलते रहें। जब आपको लगता है कि घर में कोई नहीं सुन रहा, या नौकरी की जगह में कोई नहीं सुन रहा, या शहर में सेवकाई की जगहों पर आपकी कोई नहीं सुन रहा, जब ऐसा लगता है कि मध्य–पूर्व या उत्तरी अफ्रीका या पश्चिमी यूरोप या मध्य एशिया या पूर्वी एशिया के देशों में कोई नहीं सुन रहा, जब ऐसा लगता है कि आपके आस–पास कोई भी व्यक्ति ध्यान नहीं दे रहा, तो बोलते रहें। चुप न रहें। परमेश्वर दिलों को खोलेगा।

यह सुसमाचार अच्छा है। यह सामर्थी है। इस वचन के प्रचार के द्वारा वह दिलों को खोलेगा। वह 2,000 वर्षों से इसे कर रहा है, और अब भी उसने यह बन्द नहीं किया है। उन्होंने यहाँ उसे रोकने की कोशिश की थी। उन्होंने उसे रोकने की कोशिश की थी, ये ईर्ष्यालु यहूदी उठे और वे पौलुस को रोमी अधिकारियों के सामने लाए, और उन्होंने कहा, "रोमी समिति, पौलुस को प्रचार करने से रोक दो।" रोमी समिति कहती है, "नहीं। हम वास्तव में पौलुस के प्रचार को वैध बनाने जा रहे हैं।" यह दाँव उन्हीं पर चल गया, और अब, सुसमाचार आगे जा रहा है।

परमेश्वर इस सुसमाचार को आगे ले जाएगा। चुप न रहें। हम चुप नहीं रहेंगे और इसलिए, हम नहीं रूकेंगे और चेले बनेंगे और कलीसियाओं की स्थापना होगी। पौलुस अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा पर है। आप प्रेरितों के काम 18:22 पर आते हैं, और वह अपने गृह केन्द्र, अन्ताकिया में लौटता है और अपने पीछे कुछ

चेलों और कुछ कलीसियाओं को छोड़ जाता है, और यही लक्ष्य है। आपके जीवन में और मेरे जीवन में, हमारी कलीसिया के जीवन में, विश्वास के परिवार के रूप में एक साथ, हम परमेश्वर की महिमा के लिए एक ही उत्साह के साथ जीएँगे, और चेले बनेंगे, और कलीसियाओं की स्थापना होगी, और हम नहीं रूकेंगे।

Permissions: You are permitted and encouraged to reproduce and distribute this material provided that you do not alter it in any way, use the material in its entirety, and do not charge a fee beyond the cost of reproduction.

For web posting, a link to the media on our website is preferred. Any exceptions to the above must be approved by Radical.

Please include the following statement on any distributed copy: By David Platt. © David Platt & Radical. Website: Radical.net